वर्ष-2009 माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्डरी सर्टि0 परीक्षा

केन्द्र क्रमांक की सील

परीक्षा केन्द्र क्र0-222007

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी (विशि

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/03/2009

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: U-2001, सेट: B

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

सरल क्रमांक K 3521638

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	2	2	2	1	7	1	9

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

दो	नौ	दो	दो	दो	एक	सात	एक	नौ

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में चार अंकों में 04

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 28 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

B S E M P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ________

नाम Neelam Tiwari पद Teacher

पता / संस्था S. Shishu Mandir Chhata

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्ति चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कि पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक स

हस्ताक्षर (परीक्षक) 25/3/09 हस्ताक्षर (उपमुख्य

परीक्षक क्रमांक जय कुशवाहा व्याख्याता (हिन्दी) 9510197 दिनांक..........

25

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोडें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्रमांक - 1 का उत्तर ⇒

(i) कृष्ण भक्ति शाखा ।

(ii) गणेशजी ।

(iii) कबीर ।

(iv) श्रीकृष्ण ।

(v) सूरदास ।

B S E M P

प्रश्न क्रमांक - 2 का उत्तर ⇒

(i) (ख) भय में ।

(ii) (घ) बसंती और बहू को ।

(iii) (ग) बिजनौर से ।

(iv) (ग) रेडीमेड मकान ।

(v) (ख) बचपन के अनुभव ।

पृष्ठ के अंकों का योग

P S E M P

प्रश्न क्रमांक - 3 का उत्तर ⇒

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) ~~असत्य~~ असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

प्रश्न क्रमांक - 4 का उत्तर ⇒

(i) कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है → (ग) केशवदास

(ii) हमें भौगोलिक या असत्य बताने वाले लोग हैं → (ङ) पश्चिमी सभ्यता

(iii) "वह सिपाही" कविता के रचयिता हैं → (क) विष्णुकान्त शास्त्री

(iv.) मुस्काने की सामर्थ्य है → (ख.) वीर

(v.) 'पल्लव वासना' कहा गया है → (घ.) सूखीडाली

प्रश्न क्रमांक – 5 का उत्तर ⇒

(i.) डॉ. श्याम सुन्दर दुबे ।

(ii.) ब्रज भाषा ।

(iii.) रेल के पहियों की खट-खट ध्वनि ।

(iv.) महादेवी वर्मा ।

(v.) ~~क~~ ग्वाले ने ।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(6) + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक - 6 का उत्तर ⇒

कबीर ने अपनी रचना अमृतवाणी में शब्द की महिमा बताते हुए कहा है कि शब्द के हाथ - पैर नहीं होते हैं। इसे मुँह द्वारा बोला जाता है। जो शब्द मुँह से निकल जाता है उसे वापस लेना संभव नहीं है। बोले गये शब्दों में से एक शब्द औषधि का काम कर जाता है अर्थात किसी के दुःख में राहत बनाता है जबकि दूसरा शब्द उसके लिए घाव बना जाता है अर्थात दर्द देता है।

* शब्द सम्हारे बोलिये, शब्द के हाथ न पाँव।
एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव॥

इस दोहे के माध्यम से कबीर

(7) + =

पृष्ठ 7 के अंक

ने शब्द की महिमा को व्यक्त किया है।

एक दूसरे दोहे में कबीर ने जीभ अर्थात बोलने वाले की क्षमता का उल्लेख किया है। ~~अर्थात~~

जिसने जिह्वा वस करी, जगत बसमे कराय।

अर्थात जीभ को वस मे कर लेने से सारे जग को वस मे किया जा सकता है।

इस प्रकार कबीर ने शब्द की महिमा को अपनी रचना में व्यक्त किया है।

B S E M P

4

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक - 7 का उत्तर ⇒

शिव मंगल सिंह सुमन ने अपनी रचना 'देखो मालिन मुझे न तोड़ो' मे फूल और मालिन दोनो का वर्णन किया है।

फूल और मालिन भविष्य मे मधुवर्षण करके मुरझा जायेगे। अर्थात फूल अपने मधु को समस्त जगत मे बाँटकर मुरझा जाता है। उसी प्रकार मालिन जन-जन मे प्रेरणा रूपी मधु का वर्षण करके भविष्य मे मुरझा जाती है।

अतः सुमन जी ने कहा है कि -

हम दोनो मे यौवन है, आकर्षण भी है।
भविष्य में मधुवर्षण करके हम दोनो मुरझा जाते है।

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

अतः फूल मालिन से प्रार्थना करता है कि हम दोनों एक ही है अर्थात हम दोनों मे बहुत सी समानताएँ हैं हम मुझे मत तोड़ें।

देखो मालिन मुझे न तोड़ो ॥

इस प्रकार फूल मालिन से न तोड़ने की विनती करता है और कहता है कि हम दोनों मे यौवन है आकर्षण है। हम दोनों एक ही जगती के दो फूल हैं।

अतः फूल और मालिन आज भविष्य में मधुवर्षण करके मुरझा जायेंगे।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 10 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक - 8 का उत्तर ⇒

रहस्यवादी कविता ⇒

ईश्वर संसार का सबसे बड़ा रहस्य ईश्वर है। उसको पा लेना ही रहस्यवाद है।

महादेवी वर्मा के अनुसार - "अपनी सीमा के असीम तत्व को पा लेना ही रहस्यवाद है।

विशेषताएँ ⇒

रहस्यवादी कविता की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(i) ईश्वर के प्रति आस्था।

(ii) आध्यात्मिकता की प्रधानता।

(iii) मुक्त गीति शैली।

(iv) नये छंदों का प्रयोग।

(i) ईश्वर के प्रति आस्था ⇒

रहस्यवादी कविता की यह प्रमुख विशेषता है कि ईश्वर में आस्था। इस काल के सभी कवियों ने इस जीवन को महत्वहीन बताया और ईश्वर प्राप्ति को महत्व दिया।

जैसे - भज मन चरण कमल अविनाशी ॥

(ii) आध्यात्मिकता की प्रधानता ⇒

ईश्वर के प्रति आस्था रखने के कारण इस काल में आध्यात्मिकता की प्रधानता रही। सभी कवियों ने आध्यात्मिकता का पक्ष लिया और इस जीवन की ओर से इस काल के कवि बिल्कुल नीरस हो गये थे।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

(iii) मुक्तक गीति शैली ⇒

रीति काल में रची गई सभी रचनाओं में मुक्तक छंद की प्रधानता रही। इस काल की सभी रचनाएँ किसी न किसी छंद में बंधी हुई नहीं थी।

जैसे - ~~[illegible]~~

माटी कहै कुम्हार से तू मोहे क्या रौंदे?
एक दिन ऐसा आयेगा मैं रौंदूंगी तोहि॥

(iv) नवीन ~~[illegible]~~ छंदों का प्रयोग ⇒

वैसे तो इस काल में कोई भी छंद प्रमुख नहीं था परन्तु कई नवीन छंदों का प्रयोग हुआ है। जैसे - सवैया आदि।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक – 9 का उत्तर ⇒

उपन्यास सम्राट ⇒ हिन्दी मे उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द को कहा जाता है।

क्योंकि इन्होने ही हिन्दी के उपन्यास गद्य विधा का आरंभ किया। इन्होने ही अधिक मात्रा मे हिन्दी उपन्यास लिखे जिनमें भारत की सामाजिक, ऐतिहासिक और पारिवारिक समस्याओं को ध्यान मे रखा गया है। इन सभी कारणों के कारण ही प्रेमचंद को हिन्दी उपन्यास का सम्राट कहा जाता है।

दो उपन्यासों के नाम ⇒ वैसे तो प्रेमचंद

ने अनेक उपन्यास लिखे जिनमे प्रमुख है –
(i) गबन
(ii) गोदान
(iii) कर्मभूमि आदि।

प्रश्न क्रमांक - 10 का उत्तर ⇒

भय और आशंका मे अंतर ⇒

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने निबंध भय मे भय और आशंका को बाहर परिभाषित करते हुए इनमे अंतर स्पष्ट किया। भय और आशंका मे अंतर निम्नलिखित है –

(i) दुःख या आपत्ति के पूर्ण निश्चय होने पर जो आवेगपूर्ण भाव पैदा होता

BSEMP

है उसे भय कहते हैं जबकि दुःख या आपत्ति के अनुमान मात्र से जो आवेग शून्य भाव पैदा होता है उसे आशंका कहते हैं।

(ii.) भय में आवेगपूर्ण भाव रहता है जबकि आशंका में आवेगशून्य भाव रहता है।

(iii.) भय का प्रवाह कम समय के लिये होता है जबकि आशंका का प्रवाह लंबे समय तक होता है।

(iv.) भय में व्याकुलता नहीं होती है जबकि आशंका में व्याकुलता होती है।

(v.) उदाहरण ⇒
यदि जंगल में जाते समय शेर सामने आ जाये तो उसे भय कहते हैं जबकि चलते समय शेर का आने के

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

मिलने का मन बना रहता है परन्तु वह आगे बढ़ता रहता है।

प्रश्न क्रमांक - 11 का उत्तर ⇒

सोम ठाकुर ने अपनी कविता "लन्दन दूर शहर के" में मायावित अंधकार का वर्णन किया है।

कवि सोम ठाकुर ने मायावि मायावित अंधकार का अर्थ मगाया गया अंधकार बताया है।

कवि का मायावित अंधकार का आशय पश्चिमी सभ्यता से है। पश्चिमी सभ्यता ने भारत की प्राचीन संस्कृति और मनोभावों को दुबो कर

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(17) योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 17 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

रख दिया है। कवि कहता है कि मानव पश्चिमी सभ्यता का आँख मीचे अनुसरण करता चला जा रहा है। जिसके कारण भारत के प्राचीन मानवीकरण ज्योति संस्कृतियों का ह्रास हुआ है।

तन हुए शहर के मन हुए जंगल के ।।

कवि ने कुछ उदाहरणों को यहाँ बताया है कि जब कोई कार्य का शुभारंभ होता तो शुभ द्वारा आरती उतारी जाती थी, मंगल गीत गाये जाते थे। शादी-ब्याह के शुभ अवसर पर दीवारों में हल्दी से हाथ उकेरे जाते थे। परन्तु पश्चिमी सभ्यता के आगमन से यह सब प्राचीन इतिहास बनकर रह गया है।

BSEMP

इस संदर्भ में कवि ने कहा है कि
कहाँ गया वह गाँधीजी का भारत ।।
कहाँ गये वे दीवारे पर हल्दी के हाथ ।।

इस प्रकार कवि ओम ठाकुर ने आयातित आचार अंलकार पश्चिमी सभ्यता या नवीन सभ्यता को कहा है। जिसे लोग बिना किसी सोचे समझे ग्रहण कर रहे हैं। अर्थात अपनाते जा रहे हैं। किसी को भी हमारे प्राचीन भारत की लोक मर्यादाओं का ज्ञान नहीं है।

सभी दास हैं इनमें पारत हैं।

सभी ने भारतीय संस्कृति को भुला सा दिया है।

BSEMP

प्रश्न क्रमांक - 12 का उत्तर ⇒

शांत रस की परिभाषा ⇒

जब सहृदय के ~~हृदय~~ हृदय मे स्थित निर्वेद नामक स्थायी भाव, अनुभाव, विभाव और संचारी भाव से संयोग करता है तो शांत रस की निष्पत्ति होती है।

शांत रस का स्थायी भाव निर्वेद है।

उदाहरण ⇒

शांत रस का उदाहरण निम्न है -

हे प्रभो आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिए।

~~[illegible]~~

शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए॥

लीजिए हमको शरण मे हम

नर सदाचारी बने ।
कर्तव्य पालक, और धर्मरक्षक,
वीर व्रत धारी बने ।।

उपर्युक्त पंक्तियो में शांत रस है । इसमें प्रभु की प्रार्थना की जा रही है ।

प्रश्न क्रमांक - 13 का उत्तर ⇒

(अ)
आँखो का तारा ⇒
राम राजा दशरथ के लिए आँखों के तारे थे ।

अंधे की लाठी ⇒
श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए अंधे की लाठी थे ।

BSEMP

(ख.)
बुंदेली एवं मालवी मध्यप्रदेश के भिन्न भागों में बोली जाती है –

बुंदेली ⇒ सागर, जबलपुर, टीकमगढ़, दतिया, छतरपुर आदि जिलों में।

मालवी ⇒ इंदौर, ~~रतला~~ रतलाम, धार आदि जिलों में।

B S E M P

प्रश्न क्रमांक – 15 का उत्तर ⇒

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(क.) दो रचनाएँ ⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दो रचनाएँ ~~क~~ निम्नलिखित हैं –

(i) चिन्तामणि भाग 1 एवं भाग 2 (निबंध)

(ii) रस मीमांसा (आलोचना)

(iii) हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद आदि।

(ख) भाषा शैली ⇒

भाषा ⇒ शुक्ल जी की भाषा खड़ी एवं शुद्ध परिष्कृत थी। इन्होने अपने लेखन में व्यर्थ का शब्दावार नही रखा। इनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दो की अधिकता में प्रयोग हुआ है। इन्होने अपने लेखन में मुहावरो और लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है। सूक्तियों के प्रयोग से भाषा में सजीवता उत्पन्न हो गई है।

जैसे - जननी जन्म भूमिश्च,
स्वर्गादपि गरीयसी।

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

शैली ⇒

शुक्ल जी स्वयं शैली निर्माता थे। इन्होंने समीक्षात्मक, ~~मबका~~ गवेषणात्मक, भावनात्मक और हास्य व्यंग्य शैली में रचनाएँ की हैं। समीक्षात्मक शैली में वाक्य विन्यास जटिल व होते हैं। भावनात्मक शैली में ~~का~~ शैली ~~म~~ की गंभीरता है। हास्य व्यंग्य शैली में छोटे-छोटे शब्दों व वाक्य विन्यास भी छोटे हैं। हास्य व्यंग्य शैली में हास्य की प्रधानता रही है।

(ग) साहित्य में स्थान ⇒

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक निबंधकार थे। इनके नाम पर हिन्दी साहित्य की निबंध विकास में शुक्ल युग का नाम पड़ा जिसे निबंध का स्वर्ण काल कहा जाता है। इनके अंदर की असाधारण प्रतिभा, समालोचक,

B S E M P

मध्यप्रदेश

निबंधकार व इतिहासकार के रूप में प्रकट हुई। इन्होंने निबंध को परिपूर्ण किया है।

प्रश्न क्रमांक - 15 का उत्तर ⇒

सूरदास

(क) दो रचनाएँ ⇒ सूरदास जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं -
(i) सूरसागर
(ii) साहित्य लहरी
(iii) सूरसारावली आदि।

(ख) भावपक्ष - कलापक्ष ⇒

भावपक्ष ⇒ सूरदास जन साधारण

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

वर्ष-2005 (25)

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक परीक्षा केन्द्र क्र0-222007
6. परीक्षा का नाम
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 12/3/04

पृष्ठ

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

का रोल नम्बर (अंग्रेजी अंकों में)

9	9	2	2	2	1	7	1	3

नम्बर शब्दों में

BSEMP

के कवि कहे जाते हैं। इन्होंने लोगों की सामान्य बोलचाल की भाषा में रचना की है। इन्होंने जन समूहों में श्रीकृष्ण की जो आदर्श और चंचल मूर्ति बिठायी है वह किसी अन्य के द्वारा संभव नहीं है। सूरदास जी ने श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप का मार्मिक वर्णन किया है।

कला पक्ष ⇒

सूरदास जी को वात्सल्य रस का सम्राट कहा जाता है क्योंकि इन्होंने वात्सल्य रस में अपनी रचनाएँ की हैं। इन्होंने रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा

के अंकों का योग

(26)

(2)

कुल अंक

उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग अपने काव्य मे किया है। इनकी काव्य की भाषा ब्रज भाषा है। इन्होंने मुक्तक छंद शैली मे रचनाएँ की हैं।

ब (ग.) साहित्य में स्थान ⇒

सूरदास को हिन्दी साहित्य के भक्ति काल मे कृष्ण भक्ति शाखा का सूर कहा जाता है। इनको श्रीकृष्ण के अद्भुत सौंदर्य और बाल अवस्था का वर्णन करने के कारण वात्सल्य के चितेरे कहा जाता है। सूरदास को श्रीकृष्ण के बाल्यावस्था को जन साधारण मे मार्मिक व चंचल मूर्ति दिखाने मे अद्भुत सफलता प्राप्त हुई है।

B S E M

व के अंकों का योग

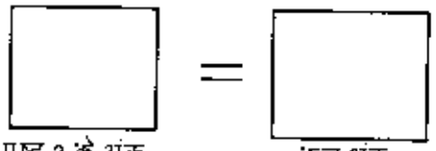

(3) + [ ] = [ ]
पृष्ठ 3 के अंक — कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्रमांक - 16 का उत्तर ⇒

(अ.)

संदर्भ ⇒

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के गद्य खण्ड के "भय" नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी हैं।

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत ~~बक~~ गद्यांश में लेखक ने आशंका को परिभाषित किया है।

व्याख्या ⇒

लेखक शुक्ल जी ने कहा है दुःख या विपत्ति आने की कल्पना से हमारे मन में जो धीमा-धीमा भय बना रहता है उसे आशंका कहते हैं। इसका संचार लंबे समय तक मंद-मंद होता है। इसमें भय के समान व्याकुलता नहीं

B S E M P

अंकों का योग

28

4

होती है। आशंका भय का ही लघु रूप है। इसका संचार काल लंबा होता है।

विशेष ⇒

(i) आशंका को परिभाषित किया गया है।
ii) भाषा सरल व सुबोध है।
iii) तत्सम शब्दो का प्रयोग है।

B S E M P

प्रश्न क्रमांक - 17 का उत्तर ⇒

(अ.)

संदर्भ ⇒

प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी विशिष्ट के पद्य खण्ड के ~~भक्ति~~ ~~काव्य~~ वात्सल्य रस प्रेम के भाई - बहन नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचियता गोपाल सिंह नेपाली है।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद्य मे कवि

पृष्ठ के अंकों का योग

र्ष-2009 (29)

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक परीक्षा केन्द्र क्र0–222007
6. परीक्षा का नाम
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 12/3/09

पृष्ठ

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

263735

उत्तर पुस्तिका का
राउल क्रमांक

1. परीक्षार्थी का रोल नम्बर (अंग्रेजी अंकों में)

2	5	2	2	2	1	7	1	5

2. रोल नम्बर शब्दों में

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

भाई - बहन के प्रेम को देश-प्रेम के माध्यम से भारत की स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए कह रहा है।

व्याख्या ⇒ कवि नेपाली जी कहते है कि भाई एक नदी की लहर के समान है तो बहन नदी की धारा है। दोनो मिलकर देश की स्वतंत्रता की रक्षा करते है। दोनो के संगम से गंगा मे उफान आता है और शत्रु का किला अचानक भवन डूब जाता है नष्ट हो जाता है। बहन भाई के लिए एक ध्रुव तारे

(30)

(2)

की तरह निडर है। और बहन को भाई का ही एकमात्र सहारा है। दोनो मिलकर देश सेवा के लिए तत्पर है। दोनो ने भारत माता को रक्षा बचाया है। और स्वतंत्रता की रक्षा की कसम खायी है।

काव्य सौंदर्य ⇒

(i) भाषा सरल है।

(ii) ओज गुण है।

(iii) पूरे पद्यांश मे वीर रस उपस्थित है।

BSFMP

प्रश्न क्रमांक - 18 का उत्तर ⇒

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक निम्नलिखित है -
"धर्म पालन और बाधाएँ"

पृष्ठ के अंकों का योग

(गी)

3

कुल अंक

मध्यप्रदेश

(ii) गद्यांश का भाव ⇒

धर्मपालन करना मनुष्य का कर्तव्य होता है परन्तु कर्तव्य के मार्ग मे बाधाओं का आना स्वाभाविक है। जो लोग अपनी आत्मा की पुकार सुनते है वे विघ्न बाधाओं को पार कर जाते है तथा जो लोग आलसी होते है वे दुविधा मे पड़े रहते है तथा सफल नही हो पाते है।

(iii) धर्म पालन के मार्ग की कठिनाई ⇒

धर्म पालन के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता, मन की निर्बलता। इन के कारण ही मनुष्य अपने कर्तव्य मार्ग से भटक जाता है।

B
S
E
M
P

के अंकों का योग

32

4

प्रश्न क्रमांक - 19 का उत्तर ⇒

कलेक्टर को पत्र ⇒

सेवा में,

श्रीमान, कलेक्टर महोदय
जिला - छतरपुर (म.प्र.)

विषय :- परीक्षा में ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग पर प्रतिबंध हेतु प्रार्थना पत्र।

सविनय,

निवेदन है कि हायर सेकेण्डरी और हाईस्कूल की परीक्षायें प्रगति पर है। और इस समय सभी छात्र अध्ययन में लगे हुए है। ऐसे समय में ध्वनि विस्तारक यंत्र विद्यार्थियों की पढ़ाई की सबसे बड़ी बाधा है।

अतः आपसे निवेदन है कि ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाई जाये।

भवदीय
नाम -

दिनाँक
12/03/2009

B S E M

पृष्ठ के अंकों का योग

(33)

वर्ष–2009

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक परीक्षा केन्द्र क्र0–222007
6. परीक्षा का नाम
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 12/3/09

पृष्ठ

...र्थी का रोल नम्बर (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	2	2	2	1	7	1	9

...नम्बर शब्दों में

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक - 20 का उत्तर ⇒

(i) प्रदूषण : कारण और निदान

रूप रेखा ⇒

* प्रस्तावना
* प्रदूषण का अर्थ
* ~~प्रदूषण के प्रकार~~
* प्रदूषण के कारण
* प्रदूषण का निदान
* उपसंहार

हे मानव, बंद करो यह दिन-
दिन का अज्ञान।
प्रकृति प्रदूषित हो रही है,
मानव सोच निदान।।

(15)

(2)

योग पूर्व पृष्ठ = कुल अंक

* ~~प्रस्ता~~ प्रस्तावना ⇒

वर्तमान समय विज्ञान का युग है। विज्ञान के समय मे हानिकारक और लाभदायक दोनो प्रकार के प्रभाव देखने को मिलते है। इस विज्ञान के युग मे ~~ह~~ हानिकारक प्रभाव अधिक देखने को मिलते है। और ये हानिकारक प्रभाव हमारे सामने प्रदूषण की समस्या के रूप मे आते है।

इस समय मानव के सामने सबसे बड़ी समस्या प्रदूषण की समस्या है। मानव ने अपने ही पैरो मे कुल्हाड़ी मारी है। लेकिन अब कोई क्या कर सकता है। अब तो इसे कुछ उपायो द्वारा कम ही किया जा सकता है।

* प्रदूषण का अर्थ ⇒

प्रदूषण का सामान्य अर्थ होता है - विवाक्त होना

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(35)

3 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

प्रदूषण का प्रमुख कारण है मानव। प्रदूषण को सही अर्थ मे कहे तो यह मानव की बुद्धि की वह सोच है जो अब मानव को ही नष्ट करने पर तुली है।

प्रदूषण है मानव की बुद्धि का वह हानि कारक रूप। जो मानव को नष्ट कर करके रहेगी खूब॥

प्रदूषण आज विश्व की प्रथम समस्या बन चुका है।

* प्रदूषण के प्रकार ⇒ प्रदूषण के कई प्रकार है जैसे -

(i) वायु प्रदूषण
(ii) जल प्रदूषण
(iii) भूमि प्रदूषण
(iv) रेडियोधर्मी प्रदूषण।

इनमे से रेडियोधर्मी प्रदूषण सबसे

अंकों का योग

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

खतरनाक है। मानव ने वायु, जल, भूमि आदि प्राकृतिक संसाधनों में अपने स्वार्थ के लिए कई प्रकार की अशुद्धियाँ मिला दी है जिनके कारण ये सभी जैसे संसाधन प्रदूषित हो गये है। मानव द्वारा नदियों मे छोड़े गये घरेलू अपशिष्ट, अपमार्जक आदि जल प्रदूषण का कारण बने हुए है।

मानव को समय रहते इन प्रदूषण को नियंत्रित करना होगा अन्यथा हाल मे कुछ नही बचेगा।

* प्रदूषण के कारण ⇒

प्रदूषण के सभी कारण मानव निर्मित है, इन सभी प्रदूषणों का मानव ही जनक है। मानव ने ही अपनी प्रखर बुद्धि के प्रयोग से संसार मे प्रदूषण की स्थिति पैदा कर दी है। यहाँ कुछ प्रमुख कारण निम्न है-

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

2009 (37)

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम ~~हायर सेकेण्डरी~~ हाईस्कूल परीक्षा
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 12/3/09

पृष्ठ

का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	2	2	1	7	1	9

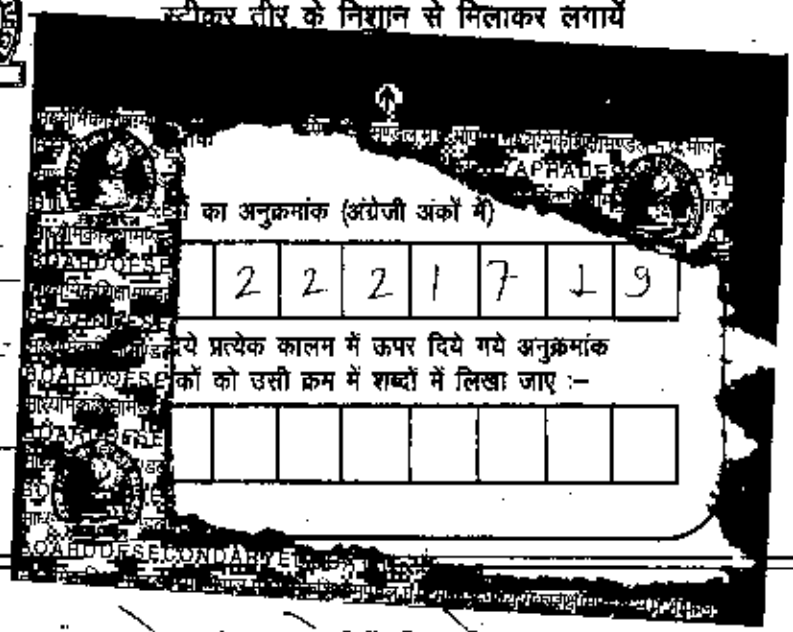

ये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक कों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

BSEMP

(i) मानव द्वारा फैलाये गये घरेलू अपशिष्ट जो जल को प्रदूषित करते हैं।

(ii) कारखानों की चिमनियों से निकला धुआँ वायु प्रदूषण का प्रमुख कारण है।

(iii) वाहित मल जो वायु व जल व मिट्टी को प्रदूषित करता है।

(iv) विभिन्न प्रकार के उर्वरकों का खनन मृदा को प्रदूषित करता है।

(v) रेडियोएक्टिव पदार्थों से निकली विद्युत किरणें रेडियोएक्टिव पदार्थ का कारण है।

मानव ही इन सब कारणों का जन्मदाता है। प्रकृति के मानव की गई छेड़छाड़ के कारण

पृष्ठ के अंकों का योग

ही प्रदूषण की समस्या गंभीर होती जा रही है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानव ही प्रदूषण का जन्मदाता है।

* प्रदूषण का निदान ⇒

प्रदूषण का निदान पूरी तरह से करना तो असंभव है। परन्तु इसे मानव के प्रयासों के द्वारा कम जरूर किया जा सकता है।

मानव तुम नियंत्रित करो
प्रदूषण के इस भूचाल को।
नहीं तो यह खा जायेगा
काल से पहले तुम्हारी चाल को।।

प्रदूषण के निदान के लिए सभी मानव जाति को एकजुट होकर प्रयास करना पड़ेगा। इसके लिए हमारे पास केवल

BSEMP

के अंकों का योग

ion\Ans081.pm5

एक ही उपाय है वन संरक्षण व प्रदूषण नियंत्रण।

अधिक से अधिक पौधों का रोपण करके तथा प्रदूषण के कारणों पर नियंत्रण करके हम प्रदूषण को कम कर सकते हैं। इसलिए हर मानव को अपने जीवन में कम से कम प्रत्येक वर्ष दस वृक्षों का रोपण करना चाहिए। तथा प्रदूषणकारी गैसों को उचित स्थानों पर छोड़ना चाहिए। वाहित मल को शुद्ध जल में नहीं छोड़ना चाहिए। मानव घरेलू अपशिष्टों को भूमि में नहीं दबाना चाहिए। कारखानों की चिमनियों को ऊँचा बनाया जाना चाहिए।

* उपसंहार ⇒

यदि समय रहते प्रदूषण का निदान नहीं किया गया तो एक दिन ऐसा आयेगा कि मानव जाति इतिहास के पन्नों

BSEMP

(50)

4

में ही छिपी रह जायेगी । मानव का
कोई भी चिन्ह नहीं बचेगा ।
अत! समय रहते मानव को
प्रदूषण की समस्या के निदान
के बारे में सोचना चाहिए
अन्यथा हाथ मलते रह जायेंगे ।
समय समय पर नियत रहे
इस प्रदूषण की छाया ।
नहीं तो नहीं बचेगा, मानव
को पानी पिलाने वाला ।।

मानव द्वारा वर्तमान समय में
किये गये प्रयास प्रभावी नहीं
है इसके लिए और अधिक
प्रयासों की आवश्यकता है ।
तथा सभी की एकजुटता ही
प्रदूषण की समस्या को कम
कर सकती है । यदि कोई
अकेला सोचे तो कुछ नहीं
कर सकता है ।

BSEMP

अजय कुशवाहा
वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
9510197